जिंदगी और जोंक : संघर्ष, शोषण एवं जिजीविषा का यथार्थ चित्रण

- ब्रजेश कुमार चौधरी

शोध सार:

अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' निम्न मध्यवर्गीय समाज की अवसरवादी मानसिकता और निम्नवर्गीय जीवन की जिजीविषा को प्रभावी ढंग से उजागर करती है। कहानी का प्रमुख पात्र रजुआ, समाज के शोषण और तिरस्कार का शिकार होते हुए भी जीवन के प्रति अपनी अदम्य इच्छा को बनाए रखता है। उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय है, फिर भी वह हर परिस्थिति से जूझता हुआ जीवन से चिपका रहता है। कहानी निम्न मध्यवर्गीय समाज के शोषणकारी रवैये और गरीब वर्ग के प्रति उनके संवेदनहीन दृष्टिकोण को उजागर करती है। रजुआ का संघर्ष समाज में व्याप्त असमानता और शोषण को दर्शाता है, जहाँ गरीब को सिर्फ साधन के रूप में देखा जाता है। अमरकांत ने इस कहानी के माध्यम से जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों के बीच जिजीविषा की विजय को रेखांकित किया है।

बीज शब्द : जिजीविषा, शोषण, निम्नवर्गीय संघर्ष, अवसरवादिता, मध्यवर्गीय समाज

अमरकांत हिंदी साहित्य के एक मूर्धन्य कथाकार हैं, जिन्होंने अपने लेखनी के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और असहाय स्थितियों को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। वे नई कहानी धारा के अंतर्गत 'जनवादी कहानी' के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। जनवादी कहानी का मूल उद्देश्य समाज के शोषित, पीड़ित और दबे-कुचले वर्गों के जीवन संघर्षों को सजीव रूप से प्रस्तुत करना था और इस दृष्टिकोण से अमरकांत की कहानियां अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती हैं। अमरकांत की भाषा सरल, सहज और सीधी है, जो आम पाठकों के दिलों तक सीधे पहुंचती है। अमरकांत के लेखन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि वे निम्न मध्यवर्गीय जीवन की घुटन, टूटन और संघर्षों को बड़ी तटस्थता के साथ प्रस्तुत करते हैं। वे अपने पात्रों की त्रासद स्थितियों को बिना किसी अतिशयोक्ति या भावुकता के प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी कहानियां और भी प्रभावशाली हो जाती हैं। उनके लेखन में जो निरुपाय जीवन का चित्रण मिलता है, वह कहीं न कहीं समाज की उस कठोर सच्चाई को उजागर करता है, जहाँ एक साधारण व्यक्ति अपने सपनों, आकांक्षाओं और उम्मीदों के बीच संघर्ष करता हुआ जीने की कोशिश करता है। अमरकांत की कहानियों में मानवता की यह जिजीविषा प्रमुख रूप से उभरती है, जो हर तरह की परिस्थितियों में जीवन को जीने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

'नई कहानी' एक प्रमुख कहानी आंदोलन है। इसका उद्भव स्वातंत्रयोत्तर भारत में हुआ, जब देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियाँ तेजी से बदल रही थीं। इस आंदोलन की कहानियों के नायक पारंपरिक रूप से न तो महापुरुष थे, न ही आदर्शवादी; बल्कि ये कहानियां साधारण मनुष्यों की जिंदगी के कटु यथार्थ और उनकी दैनिक जद्दोजहद को सामने लाती थीं। नई कहानी का नयापन दो रूप में सामने आता है- पहला, स्वातंत्रयोत्तर भारत में तत्कालीन परिस्थितियों से उत्पन्न स्थिति एवं पात्रों का चित्रण; दूसरा, उपेक्षितों एवं उनकी समस्याओं को साहित्य के केंद्र में लाना एवं उसे पाठक वर्ग के समक्ष रखना। इन उपेक्षितों को आधार बनाकर अनेक कहानियां लिखी गईं। उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण कहानी 'जिंदगी और जोंक' है, जिसमें उन्होंने समाज के उपेक्षित तबके की त्रासद स्थिति को प्रभावी ढंग से उजागर किया है। यह कहानी न केवल समाज के दबे-कुचले वर्ग के जीवन संघर्षों को सामने लाती है, बल्कि इस वर्ग की जिजीविषा और जीवन के प्रति उनकी मजबूरी और संघर्ष को भी चित्रित करती है।

'जिंदगी और जोंक' कहानी में अमरकांत ने निम्न मध्यवर्ग और निम्न वर्ग दोनों को सामने रखा है। कहानी में उन्होंने निम्न मध्यवर्ग की उपयोगितावादी नीति तथा निम्नवर्गीय व्यक्ति की जिजीविषा को रेखांकित किया है। कहानी का निम्नवर्गीय पात्र जीवन के प्रति बेहद जुझारू है। उसकी जिजीविषा और संघर्षशीलता उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। उसे भले ही समाज में किसी प्रकार की सुरक्षा या सम्मान न मिले, पर वह हर हाल में जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहता है। उसका जीवन कठिनाइयों से भरा है, लेकिन फिर भी वह हार नहीं मानता। उसकी यह जिजीविषा उस वर्ग के वास्तविक संघर्ष और दर्द को दर्शाती है, जो समाज की उपेक्षा का शिकार होता है, लेकिन फिर भी जीवन जीने की आकांक्षा को नहीं छोड़ता।

आलोच्य कहानी में निम्न मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता और उनकी व्यावहारिक दृष्टिकोण को बड़ी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया गया है। कहानी की शुरुआत में ही लेखक ने इस बात को उजागर किया है कि मध्यवर्गीय परिवार के घरों में जब कोई वस्तु गायब हो जाती है, तो बिना किसी ठोस प्रमाण या जांच के सबसे पहले घरेलू कामगारों या बच्चों पर शक किया जाता है। यह एक ऐसी रूढ़ मानसिकता है, जो समाज में गहरे तक जड़ें जमाए हुए है। कहानी में साड़ी की झूठी चोरी का इल्ज़ाम रजुआ पर लगता है और उसकी जमकर पिटाई कर दी जाती है- **"बता साले, साड़ी कहाँ रखी है? नहीं वह मार पड़ेगी कि नानी याद आ जाएगी।"**[1] हालांकि रजुआ **'मैं बरई हूँ, बरई हूँ'**[2] कहकर इसका प्रतिवाद करता है, लेकिन उसकी कोई नहीं सुनता। यह स्थिति मध्यवर्गीय समाज की संवेदनहीनता को दर्शाती है। रजुआ पर अत्याचार किया जाता है क्योंकि वह कमजोर है, गरीब है और उसकी बात न तो सुनी जाती है, न ही मानी जाती है। यह निम्न मध्यवर्गीय समाज का उस पर किया गया अत्याचार केवल सामाजिक वर्गभेद का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह उस मानसिकता का भी परिचायक है, जहाँ गरीब और कमजोर व्यक्ति को

हमेशा दोषी मानकर दंडित किया जाता है, चाहे वह निर्दोष ही क्यों न हो। अमरकांत ने इस कहानी के माध्यम से निम्न वर्ग की सामाजिक असहायता और शोषण की स्थिति को बखूबी चित्रित किया है। रजुआ की स्थिति उस व्यक्ति की है, जिसे अपने अस्तित्व के लिए न केवल आर्थिक संघर्ष करना पड़ता है, बल्कि समाज के अन्यायपूर्ण और कठोर रवैये का भी सामना करना पड़ता है।

आलोच्य कहानी निम्न मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता पर तीखा प्रहार करती है और इसका उदाहरण शिवनाथ बाबू का चरित्र है। शिवनाथ बाबू की सोच और उनके कृत्य इस बात को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं कि कैसे निम्न मध्यवर्गीय समाज गरीब और निम्नवर्गीय लोगों का शोषण करता है और अपनी गलतियों को स्वीकार करने की बजाय कुतर्कों का सहारा लेकर अपने घिनौने कृत्यों को सही ठहराने की कोशिश करता है। कहानी में साड़ी की चोरी का झूठा आरोप जब रजुआ पर लगाया जाता है, तो बिना किसी ठोस प्रमाण के उसकी जमकर पिटाई की जाती है। जब बाद में यह पता चलता है कि साड़ी घर में ही थी और रजुआ पर लगाया गया आरोप झूठा था, तो इसके बावजूद शिवनाथ बाबू में न तो कोई पछतावा है, न ही कोई ग्लानि का भाव। इसके विपरीत, वे अपने आचरण को सही ठहराने के लिए कुतर्क प्रस्तुत करते हैं– **"चलिए साहब, नीच और नींबू को दबाने से ही रस निकलता है।"**[3] इस कथन में उनका शोषक और दमनकारी रवैया पूरी तरह उजागर होता है। यह कथन दर्शाता है कि वे निम्नवर्गीय लोगों को केवल साधन के रूप में देखते हैं, जिनका उपयोग करना और उन पर अत्याचार करना उनकी मानसिकता का हिस्सा है। शिवनाथ बाबू का व्यवहार इस बात का प्रतीक है कि समाज में कुछ लोग अपनी सत्ता, अधिकार और उच्च सामाजिक स्थिति का दुरुपयोग करते हैं। वे अपनी गलती को मानने की बजाय उसे जायज ठहराने के लिए कुतर्क करते हैं। कथाकार ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि कैसे निम्न मध्यवर्गीय मानसिकता गरीब और कमजोर वर्ग के लोगों के प्रति अत्यधिक कठोर और शोषणकारी होती है। वे अपनी गलतियों का सामना करने की बजाय उन्हें अन्यायपूर्ण तरीके से दबाने की कोशिश करते हैं। शिवनाथ बाबू का यह कथन इस बात को भी उजागर करता है कि समाज के उच्च वर्ग के लोग गरीबों के साथ किस प्रकार का अन्याय करते हैं और फिर उसे नैतिकता की आड़ में सही ठहराने का प्रयास करते हैं।

कहानी "जिंदगी और जोंक" में निम्न मध्यवर्ग की अवसरवादी मानसिकता और उपयोगितावादी दृष्टिकोण पर तीखा प्रहार किया गया है। यह कहानी इस बात को उजागर करती है कि किस प्रकार निम्न मध्यवर्गीय समाज हर चीज़ में अपने फायदे की तलाश में रहता है और दूसरों का भरपूर शोषण करता है, लेकिन जब उस व्यक्ति की जरूरत होती है या वह संकट में होता है, तब उसकी कोई परवाह नहीं करता। कहानी का प्रमुख पात्र रजुआ, पूरे मोहल्ले के लिए मुफ्त का नौकर बन जाता है। अमरकांत ने इस पात्र के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता को बेनकाब किया है। रजुआ हर किसी के लिए

काम करता है, चाहे वह छोटा-मोटा घरेलू काम ही क्यों न हो। लेकिन इन कामों के बदले उसे न तो उचित पारिश्रमिक मिलता है और न ही समाज में कोई सम्मान। कहानी में उल्लेख किया गया है कि- **"उसकी सेवाओं की उपयोग संबंधी खींचातानी से उसका समाजीकरण हो गया।"**[4] यह उद्धरण निम्न मध्यवर्गीय मानसिकता की पोल खोलता है। लोग केवल इस बात में रुचि रखते हैं कि रजुआ से कितने काम मुफ्त में करवा सकते हैं। यह रवैया निम्न मध्यवर्गीय परिवारों की अवसरवादिता को दर्शाता है, जहां दूसरों के श्रम का भरपूर फायदा उठाया जाता है, लेकिन बदले में उन्हें कुछ भी नहीं दिया जाता।

कहानी में एक और महत्त्वपूर्ण मोड़ तब आता है जब रजुआ बीमार पड़ जाता है। बीमारी के समय वह सबसे अधिक सहायता की आशा करता है, खासकर उन लोगों से जिनके लिए उसने निस्वार्थ भाव से काम किया था। लेकिन इस समय निम्न मध्यवर्गीय समाज की संवेदनहीनता पूरी तरह उजागर हो जाती है। जिन लोगों के लिए वह मुफ्त में काम करता था, वे सभी उससे दूरी बना लेते हैं। शिवनाथ बाबू, जिनके यहां रजुआ ठहरता था, उसे बीमारी के दौरान घर से निकाल देते हैं। यह घटना इस बात को रेखांकित करती है कि मध्यवर्ग के लिए रजुआ सिर्फ तब तक मायने रखता है जब तक वह उनके लिए उपयोगी है। जैसे ही वह बीमार पड़ता है और उनकी सेवा करने में असमर्थ हो जाता है, वे उसे असहाय स्थिति में छोड़ देते हैं। यहां निम्न मध्यवर्गीय समाज की अवसरवादी प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है। जब रजुआ स्वस्थ था और काम कर सकता था, तब उससे सभी ने फायदा उठाया। लेकिन जब उसे मदद की जरूरत पड़ी, तो उसका कोई ख्याल नहीं रखा गया। अमरकांत इस प्रसंग के माध्यम से निम्न मध्यवर्ग की उस संवेदनहीनता और स्वार्थपरता को सामने लाते हैं, जहां व्यक्ति को केवल एक साधन के रूप में देखा जाता है, न कि एक इंसान के रूप में। अमरकांत ने निम्न मध्यवर्ग की मानसिकता को बड़े ही सजीव और व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। यह वर्ग एक ओर अपनी आर्थिक कठिनाइयों का रोना रोता है, लेकिन दूसरी ओर वह कमजोर वर्ग के लोगों का जमकर शोषण करता है। उनका उद्देश्य हर काम को बिना उचित पारिश्रमिक के करवाना होता है। इस वर्ग की उपयोगितावादी सोच यह होती है कि वे जितना अधिक से अधिक फायदा उठा सकें, उतना बेहतर। लेकिन जब काम करने वाला व्यक्ति मुसीबत में होता है, तो उसकी मदद करना उनका कर्तव्य नहीं होता। रजुआ का उदाहरण इसी मानसिकता का प्रतीक है। वह पूरे मोहल्ले का काम करता है, लेकिन जब उसे सहायता की आवश्यकता होती है, तो उसकी मदद करने लेने वाला कोई नहीं होता।

कहानी की केंद्र बिंदु रजुआ की जिजीविषा है। यह मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति है कि उसका जीवन चाहे कितना भी नारकीय हो, लेकिन वह जीने की इच्छा नहीं छोड़ता। कहानी में रजुआ का चरित्र एक ऐसा प्रतीक है, जो जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों से जूझते हुए भी अपनी जीने की इच्छा को कभी नहीं छोड़ता। समाज का हर तबका उसके साथ अन्याय करता है, उसका शोषण करता है, लेकिन वह इन

विषम परिस्थितियों के बावजूद जीवन के प्रति अपने प्रेम को बनाए रखता है। रजुआ का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। उसे हर मोड़ पर धोखा, अपमान और शोषण का सामना करना पड़ता है। साड़ी की झूठी चोरी का आरोप उस पर लगाया जाता है, उसका सामाजिक और आर्थिक शोषण होता है, और यहां तक कि जिस स्त्री के पास उसने अपने कुछ पैसे जमा किए थे, वह भी उसके 10 रुपये हड़प लेती है- **"वह बताता है कि इस तरह करते-करते दस रुपये तक इक्ट्ठे हो गये हैं। एक बार उसने बरन की बहू से अपने रुपये मांगे तो वह इन्कार कर गयी कि उसके पास रजुआ की एक पाई भी नहीं।"**[5] लेकिन इन सभी घटनाओं के बावजूद रजुआ का जीवन के प्रति नजरिया नकारात्मक नहीं होता। अमरकांत ने इस पात्र के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि जीवन की आदिम प्रवृत्ति अर्थात जीने की इच्छा, मनुष्य के भीतर बहुत गहराई से बसी होती है, जो उसे सबसे कठिन परिस्थितियों में भी हारने नहीं देती।

आचार्य शुक्ल ने अपने निबंध 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' में इस तथ्य पर जोर दिया था कि- **"विरुद्धों का सामंजस्य ही कर्म क्षेत्र का सौंदर्य है, जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता।"**[6] यही सामंजस्य रजुआ के चरित्र में दिखाई देता है। वह एक ओर अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करता है- शोषण, तिरस्कार, आर्थिक कठिनाई और दूसरी ओर, वह इन सभी परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाने की कोशिश करता है। उसकी जीने की इच्छा इन विरोधाभासों के बीच उसका संबल बनती है। रजुआ का जीवन केवल उसके व्यक्तिगत संघर्षों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह उस निम्नवर्गीय समाज का प्रतिनिधि भी है, जो लगातार शोषण का शिकार होता है। मध्यवर्गीय परिवार उसकी मेहनत का पूरा लाभ उठाते हैं, लेकिन उसे उसका सही हक नहीं देते। यह निम्न मध्यवर्गीय मानसिकता है कि लोगों को बिना सही मजदूरी दिए उनसे काम लिया जाता है और जब वह बीमार पड़ता है, तो उसकी परवाह करने वाला कोई नहीं होता। इस पर भी, रजुआ न केवल जीवन के इस कड़वे अनुभव को स्वीकार करता है, बल्कि उसमें भी एक प्रकार की खुशी ढूंढ लेता है।

निर्मल सिंघल अपनी पुस्तक 'नई कहानी और अमरकांत' में लिखते हैं कि- **"अपनी जिजीविषा के कारण ही कुछ पात्र नई कहानी के विशिष्ट पात्र बन गए हैं। इनमें अमरकांत की 'जिंदगी और जोंक' का रजुआ, मोहन राकेश की 'जख्म' का वाचक आदि हैं।"**[7] रजुआ और अन्य पात्रों में समानता यह है कि वे नई कहानी आंदोलन के ऐसे प्रतिनिधि पात्र हैं, जो कठिनाइयों और निराशाओं के बीच भी जीवन के प्रति अपने संकल्प को बनाए रखते हैं। ये पात्र जीवन की हर चुनौती का सामना करते हैं, लेकिन कभी हार नहीं मानते। उनकी जिजीविषा ही उन्हें विशेष बनाती है और इन्हीं गुणों के कारण ये पात्र नई कहानी के विशिष्ट पात्रों में शामिल हो गए हैं।

रजुआ का संघर्ष और उसकी जिजीविषा उसे साधारण से विशिष्ट बनाती है। वह हर मोड़ पर अपमानित और तिरस्कृत होता है, लेकिन फिर भी जीवन के प्रति उसका लगाव खत्म नहीं होता। उसकी

यह जिजीविषा न केवल उसके व्यक्तिगत अस्तित्व को बनाए रखती है, बल्कि यह एक सामाजिक संदेश भी है कि जीवन चाहे कितना भी कठिन हो, इंसान उसमें से कुछ न कुछ मूल्यवान जरूर निकाल सकता है। कहानी के अंत में लेखक कहते हैं कि- **"उसके मुख पर मौत की भीषण छाया नाच रही थी और वह जिंदगी से जोंक की तरह चिमटा था- लेकिन जोंक वह था या जिंदगी?"**[8] लेखक का यह कथन रजुआ की जीने की जिद को रेखांकित करता है। रजुआ की स्थिति अत्यंत दयनीय है और उसका जीवन लगातार कठिनाइयों और शोषण का सामना करता है। यहां 'मौत की भीषण छाया' से यह संकेत मिलता है कि वह शारीरिक और मानसिक रूप से टूट चुका है और उसकी जिंदगी मौत के करीब है। लेकिन इसके बावजूद वह जीवन से जोंक की तरह चिपका हुआ है। जोंक की तरह जिंदगी से चिपकना इस बात का प्रतीक है कि जीवन की तमाम विषमताओं और संघर्षों के बावजूद मनुष्य जीने की इच्छा को त्याग नहीं सकता। यह जिजीविषा उसे आगे बढ़ने और संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है। जीवन की परिस्थितियां चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो, रजुआ अपनी जोंक-समान प्रवृत्ति से जीवन से चिपके रहने की कोशिश करता है। कहानी के अंत में लेखक का यह प्रश्न- **"वह जिंदगी का खून चूस रहा था या जिंदगी उसका? मैं तय नहीं कर पाया"**[9] जीवन और रजुआ के बीच के उस जटिल संबंध को और गहराई से उजागर करता है, जहां यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि जोंक कौन है? रजुआ का फायदा उठाने वाले लोग वास्तव में असली जोंक हैं। अमरकांत ने रजुआ के माध्यम से यह दिखाया है कि जीवन चाहे कितना भी कठिन हो, मनुष्य की जिजीविषा उसे निरंतर संघर्ष करने और जीवन से चिपके रहने के लिए प्रेरित करती है। रजुआ का जीवन प्रतिकूल परिस्थितियों से भरा है–वह गरीब है, समाज उसे तिरस्कृत करता है, उसके साथ अन्याय होता है और वह लगातार शोषण का शिकार होता है। लेकिन इन सभी कठिनाइयों के बावजूद, उसकी जीवन जीने की इच्छा कभी समाप्त नहीं होती।

अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' एक सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में उभरती है, जिसमें निम्न मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय जीवन की त्रासदियों और जिजीविषा को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में रजुआ का चरित्र निम्नवर्गीय समाज के संघर्षशील जीवन का प्रतीक है, जो प्रतिकूल परिस्थितियों, शोषण, तिरस्कार और सामाजिक अन्याय के बावजूद अपनी जीने की अदम्य इच्छा को नहीं छोड़ता। रजुआ के माध्यम से अमरकांत ने समाज में व्याप्त शोषण, असमानता और संवेदनहीनता को उजागर किया है, जहां निम्न वर्ग के लोगों का शोषण उनके श्रम और सेवाओं के माध्यम से किया जाता है, लेकिन जब उन्हें सहायता की आवश्यकता होती है, तो समाज उनसे मुँह मोड़ लेता है। इस कहानी में अमरकांत ने निम्न मध्यवर्गीय समाज की उपयोगितावादी और अवसरवादी मानसिकता पर तीखा प्रहार किया है, जो हर चीज़ में अपने लाभ की तलाश करता है और दूसरों का शोषण करता है। रजुआ का शोषण इस समाज की मानसिकता को बेनकाब करता है, जहां लोग दूसरों की मेहनत का फायदा उठाते हैं, लेकिन जब उस व्यक्ति को सहायता की आवश्यकता होती है, तो उसकी

कोई परवाह नहीं की जाती। रजुआ की जिजीविषा इस कहानी का केंद्रीय बिंदु है, जो यह दर्शाती है कि जीवन चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, इंसान की जीने की इच्छा उसे संघर्ष करने और जीवन से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करती है। अमरकांत ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि जीवन के प्रति यह अदम्य लगाव और संघर्षशीलता मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है, जो उसे निरंतर आगे बढ़ने और जीने की प्रेरणा देती है। अंततः, 'जिंदगी और जोंक' न केवल निम्नवर्गीय जीवन के शोषण, संघर्ष और जिजीविषा का सजीव चित्रण करती है, बल्कि यह मध्यवर्गीय समाज की अवसरवादिता और संवेदनहीनता को भी चुनौती देती है।

संदर्भ सूची

1. अमरकान्त : अमरकान्त की कहानियाँ (भाग एक), कृतिकार, इलाहाबाद, 1984, पृष्ठ-124 .
2. वही, पृष्ठ-124.
3. वही, पृष्ठ-126.
4. वही, पृष्ठ-128.
5. वही, पृष्ठ-138.
6. http://gadyakosh.org/gk, 14/09/2024.
7. निर्मल सिंघल : नई कहानी और अमरकांत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-50 .
8. अमरकान्त : अमरकान्त की कहानियाँ (भाग एक), कृतिकार, इलाहाबाद, 1984, पृष्ठ-148.
9. वही, पृष्ठ-148.

ब्रजेश कुमार चौधरी
सहायक प्राध्यापक, दार्जीलिंग गवर्नमेंट कॉलेज, दार्जीलिंग
मो.-8101755861, ईमेल- brajeshslg@gmail.com